205 P
865
H

SV
2011

891.43
G959 Sa

1315
10/21

* राष्ट्रीय नई कजली *

सावन का सत्याग्रह

बंगाली अधर सितारेहिंदके शिष्य शायर रामदासके शिष्य

गोपाल लाल गुप्त,

प्रकाशक—मन्नालाल एण्ड को०,

कचौड़ी गली, बनारस सिटी।

मू० -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 865
Date 23-12-71
GOVT. OF INDIA

श्रीः ।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

राष्ट्रीय नई कजली।

सावन का सत्याग्रह।

—००❀००-❀००—

कजरी सुमिरनि ॥ १ ॥

सुमिरों बार बार गणनायक जिनकी अपार माया है॥ अति बिशाल तन लाल काल यम देख डेराया है। एक दन्त भुज चार हजारन बिघ्न हटाया है॥ सुख सम्पति छन में देते जब करते दाया है। गोपाल के मंगल मूरत मन बीच समाया है॥

कजरी प्रयाग राज कुम्भ मेला ॥ २ ॥

बारह बरस पर लगा कुम्भ सचमान मोरे बलमू॥ करि आंई प्रयाग राज असनान मोरे बलमू॥ टेक॥ दस पन्द्रह दिन पहिलेही से नर

नारी सब हुये तयार। बालक वृद्ध युवा घर घर से चले पाप धोने एक बार॥ मुफ्त माल खाने वाले साधुन का भी दल चला अपार। चले सभी धर्मी पापी रोजगारी लम्पट चोर छिनार॥ गाड़ी में धक्का खावें। कोई हाथ पैर तोड़वावें। दबा दबा के होते रहे पिसान मोरे बलमू॥ १॥ बाईसिकिल मोटर पर चढ़ चढ़ केतने आलम पहुँचे जाय। करीब बत्तिस लाख के ऊपर भीड़ वहां चौतरफ देखाय॥ सेवा समीती वाले भी तन मन ये काम करैं चितलाय। इन्तजाम हर तरह से करते भूले को देते पहुंचाय॥ कई असपताल खोलवाई। रोगिन का करैं दवाई। पुलिस हिफाजत करैं माल औ जान मोरे बलमू॥ २॥ हाथी घोड़ा मोटर गाड़ी का भी हम क्या करैं शुम्हार। तम्बू पर खिच गये थे तम्बू जिनकी गिनती कई हजार॥ दुकान चारो तरफ सजा था कहा तलक से लिखूं बहार। ठेठर वाइस कोप

तमासा तरह तरह का सजा बजार ॥ तिरवेनी संगम भावै । किस्ती चहुँ ओर दिखावे । रेती में लाखन थे गड़े निशान मोरे बलमू ॥ ३ ॥ दारागंज में हुआ था हड़कम उसको भी सुनिये चित लाय । एक सेंठ साधुओं के भोजन करने का दी पत्र छपाय ॥ तुरत अलोपीबागके भीतर कुल समान फौरन रखवाय । सेवा समीती के लोगन को इन्तजाम हित लिया बुलाय ॥ साधुन के दल में जाई । भोजन का पत्र घुमाई । टूट पड़े खाने साधू सैतान मोरे बलमू ॥ ४ ॥ हांथ में सड़सा चिमटा सोंटा लिये कुल्हाड़ी पहुंचे जाय हमने समझा स्वराज कारन लड़ेंगे ये सब नाम लिखाय ॥ इन्तीजामपर सेवा समीती देख के साधू गये रिसाय । गाली दे दे मारन लागे शंका तनिक न मनमें खांय ॥ चौतरफा से दौड़ावें । कहि मार मार चिल्लावें । तब सेवा समीती भागे लेले प्रान मोरे बलमू ॥ ५ ॥ ईंटा पत्थर लेले साधू पीछे से करते बौछार । सेवा

समीती के खेमें को जाके छेंक लिया ललकार ॥ समझाया पुलिसों ने बढ़ के उस पर भी कर क्रोध अपार । मार पीट करते साधू सब जा छेंका थाने का द्वार ॥ तब थानेदार रिसाई । झूठी कई फैर चलाई । चट साधू पल्टन भगी छोड़ मैदान मोरे बलमू ॥६॥ एक महंत की बिगड़ के हांथी लगी दौड़ने इधर उधर । महंत बिचारे थामके रस्सी रहे लटकते चूतर पर । ले ले हांथी कुछ लोगों ने छेंक के हांथी लीन्हा घर । केतने घायल हुये बिचारे बच गये बाबा कड़े जिगर ॥ जलमें डूबी थी नइया । बचगये बहुत चढ़वइया । डूब के केतने सुर पुर किया पयान मोरे बलमू ॥ ७ ॥ सुना कि एक बुढ़िया लड़की को पहिना कर जेवर भरपूर । एक साधूके कुटी में जाके कहन लगी कीजै दुख दूर ॥ बाबा जी बोले बुढ़िया से लाओ बच्चा लौंग कपूर । चली गई बुढ़िया बाबाजी के ढिग अपना छोड़ के हूर । लड़की को बाबा लेकर । चट गये कुटी के

भीतर। हलाल कर कुल रकम लिया बेईमान मोरे बलमू ॥ ८ ॥ बुढ़िया आके लगी पूछने कहां गई लड़की प्यारी। बिगड़ के बाबा बोले भागो गई है तेरी मत मारी ॥ कहा पुलिस से जा बुढ़िया हर तरह से जब हिम्मत हारी। पुलिस ने आके लिया तलासी देखा सब पारापारी ॥ शकबस जमीन खोदवाया। शिरसहित रकम सब पाया। पकड़ गये बाबा भूले सब ग्यान मोरे बलमू ॥ ९ ॥ भीड़ में केतने कुचल के मर गये राम राम का करके जाप। तिस पर हैजा हुआ था जारी मरे बहुत सहके सन्ताप ॥ स्टेसन का हाल वही जानै जो गया था धोने पाप ॥ होती थी हर तरह खराबी केतने करते रहे बिलाप ॥ पण्डा मन मानी करते। रुपयों से थैली भरते। खराब होगईं केतनी नार जवान मोरे बलमू ॥ १० ॥ कहां तलक से बतलाऊं मैं हुवा वहां पर जो जो हाल। निहाल होते चोर लुटेरे केतने रोते गवां के माल ॥ एक तो जाड़ा

दुजे खुशी हो पानी बरसे दीन दयाल । बार बार प्रनाम कुम्भ को बारह बरस का गया जवाल ॥ कहें रामदास पद खासा । दुनियां का अजब तमासा । गोपाल रचते सदा छन्द रसखान मोरे बलमू ॥ ११ ॥

कजरी ॥ ३ ॥

भारत में आके भारत का कुछ तो करो भलाई ना ॥ माल बिदेशी एक न लेवों यही लड़ाई ना । चीज स्वदेशी को प्यारे सब लेव अपनाई ना ॥ बहुत दिना से दुःख सहते हैं हम सब भाई ना । कहें गोपाल उठो मिलजुल क्यों देर लगाई ना ॥

कजरी ॥ ४ ॥

लेगें स्वराज हम सब मिलजुल चर्खा रोज चलावेंगे ॥ सूत कात अच्छी मलमल हम खूब बनावेंगे ॥ चरखा नहिं यह चक्र इसे करके दिखलावेंगे ॥ इसी के बल पर दुसमन को उस पार भगावेंगे । गोपाल कहते भारत का झंडा फहरावेंगे ॥

कजरी ॥ ५ ॥

अब तो स्वराज हम सब लेगें दिल में यही बिचाराहै ॥ महात्मागांधी ने चरखा चक्र सुधाराहै। है भारत अपना कोई का नहीं इजारा है ॥ उधर तोप इत असहयोग समर करारा है। गोपाल कहते तजो विदेशी विनय हमारा है ॥

कजरी ॥ ६ ॥

सुखसे रहेंगे हम भारत में वह दिन आने वाला है ॥ सहेगे दुख वो भी जैसे हम पर दुख डाला है। अमर वही है खूनसे जिसके हुआ उजाला है विदेशियों का धीर धीरे होत देवाला है। देशके दुश्मन का रहता सब दिन मुंह काला है। गोपाल कहते पड़ा कठिन जालिम से पाला है ॥

कजरी ॥ ७ ॥

भारत माता की जैजै बोलो हरखाय के ; बार बार गुन गायके ना ॥ भारत के बीरों एक बार कसके कमर बढ़ो ललकार। करमें असहयोग का हरवा लो चमकाय के, बार बार गुन गायके ना ॥ १ ॥

करके सत्याग्रह संग्राम। बीरों रखलो अपना नाम। जालिम के जुल्मों से डरना मत घबड़ाय के, बार बार गुन गाय के ना ॥२॥ जेहल करैं तो जेहल जाना। डंडा पड़े तो गम मत लाना। सनमुख तोप के आगे सीना रखो अड़ाय के बार बार गुन गायके ॥ ३॥ तजके बिलकुल माल पराई। देशी को लीजै अपनाई। खादी प्रेम से पहिरो चरखा चक्र चलायके, बार बार गुन गाय के ना ॥४॥ हिन्दु मुसलमान सब मिलिके। दोनों हो जाओ एक दिलके॥ कहते गोपाल लेलो स्वराज चटपट धायकें बार बार गुन गायके ना ॥ ५ ॥

कजरी ॥ ८ ॥

भारत हुआ है गारद यार विदेशी जब से आया है॥ ढो ढो भारत का धन अपने घर पहुँचाया है। मौज करैं अपने हम को खुब नांच नचाया है ॥ हलाल करके हाय हमें हर तरह सताया है ॥ गोपाल कहते कर्म धर्म सारा छोड़वाया है ॥

कजरी ॥ ९ ॥

अबतो खादी से मोरे सइंया सबको प्रेम बढ़ाना है। एक टुकड़ा भी माल बिदेशी घर नहिं लाना है ॥ मरने पर भी खादी का अब कफन ओढ़ाना है ॥ भारत की दौलत जाने से तुम्हें बचाना है। गोपाल मटरू कहें नहीं पीछे पछताना है ॥

कजरी ॥ १० ॥

दुश्मन दगा बाज मोरी गोइयां कहिया जाई बिलाई ना ॥ लूट लूट सब अनधन अपने घर पहुँचाई ना। चुन चुनके नेतनके हमरे जेहल पठाईना॥ उठो बहिन मिलजुल के हमहूँ करब लड़ाई ना। गोपाल कहते बार बार नहिं अवसर आई ना ॥

कजरो ॥ ११ ॥

जननी जन्म भूमि है प्यारी हम आजाद बनावेंगे ॥ काट गुलामी की बेड़ी कुल कष्ट छोड़ावेंगे। जुल्म करें जो जो जालिम सब सहते जावेंगे ॥ सत्याग्रह से शत्रू को उस पार भगावेंगे। गोपाल कहते गुलामी अब नाम मिटावेंगे ॥

कजरी ॥ १२ ॥

तजके माल बिदेशी देशी से सब काम चलइबै ना ॥ मंगा के चरखा सूत कात कपड़ा बिनवइबै ना । अद्धी मलमल बढ़के उनसे हम दिखलइबै ना ॥ तरह तरह के काम सदा हमहूँ फैलइबै ना । गोपाल मटरू भारत में फिर अब सुख पइबैना ॥

कजरी ॥ १३ ॥

भारत विनय करै बहु भांती ॥ टेक ॥ बेगी छोड़ावहु मोहिं बंधनसे अब दुख सहि नहिं जाती। भारत बिनय करै बहु भांती ॥ करोड़ तेंतिस पुत्र हमारे । शूर बीर सब प्रान पियारे ॥ बैरफूट आपस में करिके खोय दियो निज थाती ॥ भारत बिनय० ॥ गैरों के बस में मोहिं करके । सोये सुख की नींद पसर के । लूट लूट अन धन सब लेगये हम कलपत दिन राती ॥ भारत बिनय० ॥ २ ॥ बादशाह अपने कहलावें । गुलाम काला तुम्हें बतावें ॥ जो सुख अपना चाहो प्यारे उठो बीर

बतलाती ॥ भारत बिनय० ॥ ३ ॥ जेहल से हरगिज मत डरना । बलिवेदी पर जाके चढ़ना ॥ तोप तमंचा के सनमुख जा खोल खड़े हो छाती । ॥ भारत बिनय० ॥ ४ ॥ बंधन से चट मोहिं छोड़ाओ । सुख सम्पति सारा अपनाओ ॥ कहें गोपाल चलो सब मिल जुल भारत मां गोहराती ॥ भारत बिनय० ॥ ५ ॥

कजरी ॥ १४ ॥

करते हैं शरीफ़ नहीं हुज्जत इज्जत सदां बचाते हैं ॥ ओफ़ करैं नहीं जबां से लाखों सितम उठाते हैं ॥ आजावे गर अनी कनी खाकर मर जाते हैं । करै रहम गैरोंपर अपना गला फसांते हैं ॥ गोपाल कहते ऐसे नर नहिं बहुत देखाते हैं ॥

कजरी ॥ १५ ॥

तजके माल बिदेशी देशी से सब प्रेम बढ़ाओ ना ॥ घर घर में चरखा अब सब कोई रोज चला-ओना । मिलजुलके खद्दर पहिनो सबके पहिनाओ

ना ॥ भारत के हित कुछ भी तो करके दिखलाओ ना । कहें गोपाल बिदेशिनके बिन सस्त्र भगाओना॥

कजरी ॥ १६ ॥

धन धन बीर जवाहिर लाल जगत भर का यह प्यारा है ॥ बिना ताज का संहशाह यह मित्र हमारा हे ॥ एक दिल से सब कहते भारत का उजियारा है ॥ बीर धीर गुणवान नैन का सबके ताराहै। कहें गोपाल गुलामी बंधन काटन हारा है ॥

कजरी ॥ १७ ॥

भारत को करदो आजाद यही एक बिनय हमारा है ॥ महात्मागांधी रण शिक्षक चतुर तुम्हारा है । सैनापति हैं बीर जवाहिर समर करारा है ॥ ऊंचा झंड़ा करदो यह भारतका प्यारा है। गोपाल कहते गुलाम बनना नहीं गंवारा है ॥

कजरी ॥ १८ ॥

अबसे चेत करो मोरे भइया क्यों गफलत में सोतेहो ॥ पैरके नीचे अपने कांटा आपी बोतेहो । गली गली किस कदर हाय बेइज्जत होते हो ॥

पड़े पड़े अपनी हालत पर निस दिन रोते हौ।
गोपाल कहते उठो समय कह नाहक खोते हौ॥

कजरी ॥ १९ ॥

काहे मोटी कइला भारत से नजरिया, कमली वाले सांवलिया ॥टेक॥ अइसन बइठे कहवां जाई। बतिया गीताके भुलवाई। काहे मोटी कइला भारत से नजरिया, कमली वाले सांवलिया ॥ जेजे भयल यहां अन्याई। छनमें देहला उसे नसाई॥ भारत के अपने सब दिन कइला खबरिया, कमली वाले सांवलिया ॥ १॥ जालिम आके जुलुम मचौलस। सबकर कर्म धर्म छोड़वौलस। भारत नास करेके कइले बाय तैयरिया, कमली वाले सांवलिया ॥२॥ हमके लूट लूट कलपावे अपने बइठल मजा उड़ावे अपने शेर बनल हमके कइलस बकरिया, कमलीवाले सांवलिया ॥ ३ ॥ तनिको जो कतहूँ हम बोली। मारै तुरत चढ़ाके गोली ॥ केतनन के मरवौलस दे दे के फंसरिया, कमली वाले सांवलिया ॥ ४ ॥

अन्तर्यामी हौ जदुराई। दुख हम कहां तलक से गाई। तोहरे बिन कुल कलपैं भारत क नगरिया, कमली वाले सांवलिया ॥ ५ ॥ लेके चक्र तुरत प्रभु आओ। भारत का दुख आय छोड़ाओ ॥ कहते गोपाल मटरू रचके यही कजरिया, कमली वाले सांवलिया ॥ ६ ॥

कजरी ॥ २० ॥

मिलके सब भारत के लाल देश दुख दीजै टारी ना ॥ सहते हौ अपमान मुसीबत निस दिन भारी ना। देशीको अपनाय ।बिदेशी फुंकों सारी ना ॥ गांधी जी की मान के बतिया बढ़ो अगारी ना। गोपाल कहते भारत को अब लेव उबारी ना ॥

कजरी ॥ २१ ॥

बीरों उठो उठो उठो एकबार तुम्हें गर जग में रहना है ॥ सत्याग्रह की लड़ो लड़ाई अब क्या डरना है। बढ़े चलो ललकार वीर नहिं पीछे टरना है ॥ देशी चीजोंका प्रचार सब जग में करना है।

गोपाल कहते आखिर एक दिन सबको मरना है॥

कजरी ॥ २२ ॥

कहां तुम भूले हौ करतार। भक्तन के कारन क्या जगमें हो झूठा औतार॥ कहां तुम भूले हौ करतार ॥ टेक ॥ नाम सदां सुनली हम भारी। भक्तनक कइला रखवारी। निज दासन के कारन रावन क कइला संहार॥ कहां तुम भूले॰ ॥ भक्त प्रहलाद तुम्हे गोहराये। झट पट नरसिंह रूप बनाये। खम्भ फार हरनाकुश के धर देहला उदर बिदार॥ कहां तुम भूले॰ ॥ कृष्ण रूप धरके जब आये। कंसासुर के मार गिराये। केतनन असुरन के बध करके मेट्यो दुख अपार॥ कहां तुम भूले हौ॰ ॥ अब काहें रिसिया के एतना। हो गइला दरसन के सपना॥ होत यहां तुम्हरे दासन पर नित नई अत्याचार॥ कहां तुम॰ ॥ होत जुर्महम पर मन माना। कलप रहा भारत बिन दाना॥ पशुवन की नाईं तोने पर खाते हरदम मार॥

कहां तुम भूले० ॥ दुख रंजन भंजन महि भारा । नाम विदित बाटै संसारा । चक्र सुदर्शन लेकर आओ रह जाय नाम तुम्हार ॥ कहां तुम भूले० ॥ बैरिन के झट मार गिराओ । अपने भारत को अपनाओ । गोपाल मटरू कहें धर्मका हो घरघर प्रकार ॥ कहां तुम भूले हौ करतार ॥

कजरी ॥ २२ ॥

बीरोंरण भेरी बज चुकी केसरिया पहिरो बाना ना ॥ निकल पड़ो कस कमर वीर जितने मरदाना ना । सत्याग्रह संग्राम मे जाके सर कटवाना ना ॥ दहसत हो तो रहो किनारे बने जनाना ना । गोपाल कहते भारत को स्वाधीन बनाना ना ॥

पुस्तक मिलने का पता--

मेवालाल एण्ड को०

कचौड़ीगली बनारस सिटी ।

जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव, काशी में मुद्रित ।

छपगई ! बिल्कुल फ्रेश अपूर्व पुस्तकें !! छपगई !!!

इसलिये आइये—

सुनहला मौका न बिसारिये ! खरीदिये और अवश्य खरीदिये !!

सावनसती उर्फ पटनेकाशोर)॥
सावन सौगात उर्फ जातीय
चौधरी सर्दारकी कजलियां)॥
सावनस्वदेश उर्फगौपुकार -)॥
सावन सरदार)॥
सावन सन्देश उर्फ बेचूबीर
व गाजीमियां की कजली)॥
सावन का सहायक उर्फ मेला
घुमनी बेटीबेचवाकी कजली)॥
सावन का सखा)॥
सावन का सेनापति)।।।
बड़ा कजरी सितारे हिंद ≡)
सावन शहीद उर्फ
श्रद्धानन्द का हाल)॥
सावन की शुद्धि)॥
सोवका का संगी)॥
सावन का राजा)॥
नई कजरी टुनमुनियां)॥
सावन स्वराज)।।।
सावन का सत्याग्रह)।।।
भारत पिकेटिंग)।।।

स्त्रीशिक्षक उर्फ स्त्रीधर्मोपदेश॥-)
नारी शिक्षा दर्पण ।)
स्त्री गीत बहार उर्फ स्त्री गीत
प्रकाश -)॥
नारी धर्म उपन्यास ।)
तिलस्मी तहखाना उर्फ
कुमारीमधुवसरी १ला खंड ॥)
भारत दुर्दशा नाटक ॥)
पृथ्वीराज नाटक ॥)
कुअरकान्ता चारो भाग ॥)
हकीकत राय ≡)
रामलीला नाटक ॥)
विदेशिया नाटक ≡)
कवित्त बजरंग विजय ।)
सवैया शतक ≡)
कवित्त कुञ्जन बहार ≈)
श्रीमती मंजरी नाटक ।।।)
सती अनुसुइया ॥)
अमृतोपदेश -)॥
सावन स्वदेश भारत)।।।
राष्ट्रीय गायन ।।।)

विशेष हाल जाननेके लिये हमारा बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगादेखें

पता—मेवालाल एण्ड को०, पुस्तकालय,

कचौड़ी गली, बनारस सिटी।